Peer Reviewed Journal for M.Phil., Ph.D. & Appointment of Teacher in Universities & College

ISSN : 2454-4655 VOLUME - 5 No. : 5 June - 2019

International Journal of Social Science & Management Studies

Referred & Review Journal

Indexing & Impact Factor 3.9

Indian Tech

GLOBAL CERTIFICATION SERVICES

International

Contents

S. No.	Paper Title	Author Name	Page No.
1	Hkkjr:Un ;xhu dk0; e: jk"Vªh; psruk	ik;y fyYgkj:	1-3
2	नि:शुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2010 देश के विकास d: fy, i.k vf/kfu;e	Mk- द्रवेश भंडारी	4-6
3	fo|kfFk;k dh oKkfud iofUk dk mud: fo'y:"k.kkRed {kerk ij iHkko dk v/;;u	Jherh ghjk dekjh Mk- ¼Jhefr½ d-d- nc:	7-9
4	efgyk vkj{k.k leL;k % ipk;r] uxj fudk; vkj lgdkjh lLFkk,: & lekèkkukRed l>ko	uhye?k proinh lfç;k xlr:	10-12
5	Hke.Myhdj.k ,o: विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की vo/kkj.kk	Mrs. Kiran Sachdeva	13-20
6	Hkkjr e: /kkfeld rFkk lkekftd l/kkj vkUnkyu	fi:;dk frokjh	21-26
7	;kx d: }kjk fL=;k e: Y;dkfj;k ¼'or inj½ rFkk ;kfu lØe.k jkx dk ic/ku	Mk- ykythr ipkjh	27-31
8	Hkfä Kku dk vU;kU; lEcU/k	Jh vo/k'k dekj f}onh ik- d-ch- i.Mk	32-33
9	vulfpr tutkfr;k d: lkLdfrd vkfFkd fodkl dk Hkkxkfyd v/;;u ¼fM.Mkjh ftyk d: lnHk e½	f'koUn: dekj /ko: Mk- f'ko dekj nc:	34-49
10	efLr"d jpuk o ekufld jkxk dk ;kfxd mipkj	Mk- eukst dekj 'kek	50-52
11	ckyk?kkV ftyk e: LokLF; lfo/kk,: ,o: cxk tutkfr d: mRFkku d: fy, pykbZ tk jgh 'kkldh; ;kstukvk dk Hkkxkfyd विश्लेषण	ehuk{kh ejkoh Mk- leuyrk ijkfgr	53-65
12	orieku e: fgUnh Hkk"kk dh iklfxdrk	Mk- lxhrk R;kxh	66-67
13	lhgkj e: egkdekj dk jkT;	ज्ञानप्रकाश सिंह यादव	68-69
14	xkeh.k ,o: uxjh; Lukrd efgykvk e: jktuhfrd tkx:drk dk v/;;u	Mk- lHkk"k dekj lkuh	70-78
15	विश्व 0;kikj lxBu d: Nf"k iko/kkuk dk v/;;u	Mk- fi:;dk nc:	79-81
16	vVy fcgkjh okti:;h dk ykdrkf=d eY;k d: ifr fu"Bk % ,d foopu	Mk- pUndkUrk tu jkekdkUr	82-86

International Journal of Social Science & Management Studies (Peer Reviewed & Refereed Research Journal) I.J.S.S.M.S.
& Impact factor - 3.9 Research Journal
ISSN : 2454 - 4655, Vol. - 5, No. – 5 June 2019

vVy fcgkjh okt i s;h dk ykdrkf=d eY;ksa d s ifr fu"Bk % ,d foopu

Mk- pUnzdkUrk tSu
सहायक प्राध्यापक, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)
jkekdkUr
शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

Lkkरांश :– लोकतंत्र की शुरूआत एथेन्स (यूनान) से मानी जाती है। अरस्तु, रूसों, मांटेस्क्यू, अब्राहम लिंकन से लेकर वट्रेन्ड रसेल आदि ने अपने–अपने सिद्धान्त के आधार पर लोकतंत्र की व्याख्या की है। यहाँ तक की 1917 में मार्क्सवादी सिद्धांतों पर हुई रूसी क्रांति तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में बनी साम्यवादी सरकारों ने स्वयं को ”जनवादी लोकतंत्र” कहा था। लोकतंत्र को प्रारम्भिक काल से ही केवल एक शासन पद्धति के रूप में समझा जाता रहा है, लेकिन वर्तमान में लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं, वरन् जनता के लोगो की जीवन शैली के रूप में परिवर्तित हो रहा है। भारतीय लोकतंत्र को विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र माना जाता है। लोकतांत्रिक मूल्य, भारतीय समाज का मौलिक विश्वास और संवैधानिक सिद्धांत है, जिसके द्वारा किसी भी व्यक्ति को उसके जीवन में व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, सहयोग, और सहनशीलता द्वारा अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित होता है। अटल बिहारी बाजपेयी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वह राजनीति में आने से पहले पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय थे। उन्होंने ”राष्ट्रधर्म”, “पॉचजन्य” और “वीर अर्जुन” आदि में राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया। वह एक सांसद, कैबिनेट मंत्री और प्रधानमन्त्री के तौर पर उनके हर कृतित्व एवं व्यक्तित्व में किये गये कार्यों में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता परिलक्षित होती है।

कुंजी शब्द %& लोकतंत्र, लोकतांत्रिक प्रक्रिया एवं लोकतांत्रिक मूल्य।

लोकतंत्र की शुरूआत एथेन्स (यूनान) से मानी जाती है। अरस्तु, रूसों, मांटेस्क्यू, अब्राहम लिंकन से लेकर वट्रेन्ड रसेल आदि ने अपने–अपने सिद्धान्तों के आधार पर लोकतंत्र की व्याख्या की है। यहाँ तक की सन् 1917 में मार्क्सवादी सिद्धांतों पर हुई रूसी क्रांति तथा द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूर्वी यूरोप में बनी साम्यवादी सरकारों ने स्वयं को ”जनवादी लोकतंत्र” कहा था। लोकतंत्र को प्रारम्भिक काल से ही केवल एक शासन पद्धति के रूप में समझा जाता रहा है, लेकिन वर्तमान में लोकतंत्र केवल एक शासन पद्धति नहीं, वरन् जनता के लोगो की जीवन शैली के रूप में परिवर्तित हो रहा है। इसी के सन्दर्भ में जॉन डिवी (1916) ने कहा है कि, ‘लोकतंत्र कोई शासन की पद्धति नही है, वरन् यह ऐसी सामाजिक जीवन शैली है जो मनुष्यों को एक दूसरे के करीब आने और परस्पर सहयोग के अवसर दे सकती है ये अवसर निरंतर प्रयोग की परिस्थितियाँ पैदा करते है और समाज के हर सदस्य को व्यक्तिगत, सामाजिक और मानसिक विकास की सम्भावना बढा देते हैं इसलिए लोकतंत्र को लोगों के मन के व्यवहार में स्थापित करने की आवश्यकता है तब ही इसकी सार्थकता सिद्ध हो सकती है अन्यथा नही।[1]

भारतीय लोकतंत्र को विश्व का सबसे बडा लोकतंत्र माना जाता है। लोकतांत्रिक मूल्य, भारतीय समाज का मौलिक विश्वास और संवैधानिक सिद्धांत है, जो भारतीयों को एकजुट करतें हैं। इन मूल्यों कों भारतीय संविधान द्वारा व्यक्त किया गया है, जिसके द्वारा भारतीय नागरिक अपने व्यक्तिगत एवं सामाजिक व्यवहार करने के लिए अभिप्रेरित होता है। जिसके निम्नलिखित छः आयाम है जो इस प्रकार से है– व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, सहयोग और सहनशीलता।[2]

अटल बिहारी बाजपेयी भारतीय जनसंघ के संस्थापक सदस्य थे। वह राजनीति में आने से पहले पत्रकारिता के क्षेत्र में सक्रिय थे। उनका जन्म 25 दिसम्बर, 1924 में ग्वालियर (म.प्र.) में शिंदे की छावनी में हुआ था।[3] साधारण परिवार में जन्मे अटल बिहारी वाजपेयी के पिता कृष्ण बिहारी वाजपेयी अध्यापक थे और साथ ही वे महान कवि भी थे। जिसके चलते उनमें कवित्व का गुण अपने पिता से विरासत में मिला। उन्होंने ग्वालियर के ही विक्टोरिया कॉलेज (अब लक्ष्मीबाई कॉलेज) से उच्च श्रेणी में बी.ए. और उत्तर प्रदेश की व्यवसायिक नगरी कानपुर के डी. ए. वी.

कॉलेज से राजनीति शास्त्र में प्रथम श्रेणी में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।[4] उन्होंने छात्र जीवन से राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बने और तभी से राष्ट्रीय स्तर की वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में भाग लेते रहे। तीन बार भारत के प्रधानमंत्री रहे अटल बिहारी वाजपेयी का 16 अगस्त 2018 को दिल्ली के एम्स में निधन हो गया।[5] उनकी बहुचर्चित कई पुस्तकों में रचनाएँ प्रकाशित हुई जिनमें 'कैदी कविराज की कुंडलियां' (आपात काल के दौरान जेल में लिखी गी कविताओं का सग्रह), 'अमर आग है' (कविता संग्रह) और 'मेरी इक्यावन कविताएँ', 'चुनी हुई कविताए', और 'राष्ट्रधर्म', 'पॉचजन्य' और "वीर अर्जुन" आदि जैसे राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत पत्र–पत्रिकाओं का संपादन किया।[6]

अटल बिहारी वाजपेयी को वंशानुगत और वातवरण दोनों से काव्य संस्कार प्राप्त हुए थे।[7] उनके विचारों पर राष्ट्रिय स्वयंसेवक संघ और आर्य समाज का गहरा असर रहा है वैसे स्वामी विवेकानन्द, स्वामी दयानन्द, तिलक, महात्मा गाँधी, सावरकर, डॉ हेडगेवार, एम.एन.राय, जवाहरलाल लाल नेहरू, श्री गुरूजी से लेकर डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी, डॉ लोहिया, पं. दीनदयाल उपाध्याय आदि परस्पर विरोधी दिखने वाले विचारकों के व्यक्तित्व और कृतित्व ने अटल जी को अपनें–अपनें ढंग से प्रभावित किया है। यही कारण है की भारयीय जनता पार्टी में संस्थागत आबद्धताओं के बावजूद संस्थाबध्दता से उपर उठकर लोकतांत्रिक विचार और निर्णय करने की क्षमता विकसित हुयी।[8]

अटल बिहारी वाजपेयी अपने सभी रूपों में सिर्फ मानव है, बाद में और सब कुछ वह किसी को पराया नहीं मानते, उनके लिए सभी अपने है, इसिलिए वह भगवान से यही प्रार्थना करते है कि –

मेरे प्रभू
मुझे इतनी ऊँचाई कभी मत देना,
गैरों को गले न लगा सकूँ
इतनी रूखाई
कभी मत देना [9]

राजनीतिक जीवन को देखें तो, अटल बिहारी वाजपेयी 1955 में पहली बार लोक सभा चुनाव लड़ा था, जिसमें उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। दूसरी 1957 में बलरामपुर सीट से लोकसभा का चुनाव लड़ा और पहली बार जीत कर लोकसभा में पहुचें। वह मोरारजी देसाई की सरकार में सन 1977 से 1979 तक भारत के विदेश मंत्री रहें और विदेशों में भारत की छवि का प्रसार किया।[10] वह ऐसे विदेश मंत्री थे, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में भाषण देकर भारत को गौरवन्वित किया।[11] वह भारत के तीन बार प्रधानमन्त्री रहें। 1996 में पहली बार भारत के प्रधानमन्त्री बने हालांकि पहली सरकार सिर्फ 13 दिन ही चल सकी। 1998 में दूसरी बार गधबंधन सरकार में प्रधानमन्त्री बने और इस बार सरकार का कार्यकाल 13 महीने रहा। तीसरी बार 13 अक्टूबर 1999 में 13 दलों के गधबंधन के साथ उन्होंने पांच वर्ष के कार्यकाल पूरा किया। वह पांच साल तक प्रधानमन्त्री के रूप में रहने वाले पहले गैर कांग्रेसी नेता थे।[12]

अटल बिहारी बाजपेयी सत्ता के गलियारों में आजातशत्रु कहलाते थे। तीन माह पुरानी सरकार वर्ष 1999 में केवल एक वोट से गिरी थी, हंसते–हंसते प्रधानमंत्री पद छोड़ने वाले अटल बिहारी बाजपेयी ने कभी कटाक्ष या आरोपों की मदद नहीं ली।

उनके व्यक्तित्व की विशालता, उनकी ही कविताओं की ये पंक्तियाँ परिचायक हैं।

टूटे हुए सपने की सुने कौन सिसकी ?
अन्तर को चीर व्यथा पलकों पर ठिठकी
हार नहीं मानूँगा,
रार नहीं ठानूँगा,
काल के कपाल पे लिखता–मिटाता हूँ।
गीत नया गाता हूँ।[13]

शिक्षा–व्यापक अर्थो में साक्षरता नहीं, अपितु एक जीवन दर्शन है। हम दार्शनिक विचारों, सिद्धान्तों एवं मान्यताओं के माध्यम से शिक्षा सम्बन्धित समस्याओं का आकलन कर उसके निहितार्थ में छिपे हुए प्रश्नों के उत्तर ढूंढते है, और समग्र समाज के विकास के लिए मूल्य निर्धारित करते है। अटल बिहारी वाजपेयी के जीवन में अनेक पड़ाव आये, परन्तु उनका दर्शन शैक्षिक मूल्यों पर आधारित रहा। वे शिक्षकों में उन गुणों को देखना चाहते, जिनका दृष्टिकोण यथार्थ के प्रति आलोचनात्मक तथा सर्जनात्मक हो। जॉन डिवी (2016) के शब्दों में, 'शैक्षिक मूल्य के विषय में कुछ निष्कर्ष निकाले जा सकते हैं कि हम अध्ययन के मूल्यों का कोई पदानुक्रम निर्धारित नहीं कर सकते है। उनको किसी ऐसे क्रम में रखना निरर्थक होगा, जिससे यह पता चले कि उसमें से किसका मूल्य अधिकतम है। क्योंकि अनुभव में प्रत्येक अध्ययन का कार्य अनन्य और अपूर्णीय होता है, क्योंकि प्रत्येक अध्ययन जीवन को

चरित्रगत प्रगाढ़ता प्रदान करता है। अतः उसकी श्रेष्ठता आंतरिक अंतभूर्त और अतुलनीय होती है।[14]

vVy fcgkjh okti;h vkj ykdrkf=d eY;k d ifr fu"Bk %& अटल बिहारी वाजपेयी का इस बात में वि वास था कि 'लोकतंत्र महज 51 और 49 का खेल नहीं है, लोकतंत्र मूलतः एक नैतिक व्यवस्था है। संसद और सदन केवल कानून की छोटी अदालत नहीं, जहाँ शब्द जाल ही प्रमुख है। यह एक राजनीतिक मंच है।'[15] तथा 'मानवाधिकारों के संदर्भ में भाषण देते समय स्वीकारा की मानव का सम्मान हमारे मूल्यों में समाहित है।'[16] देश के लिए उनका प्रेम और लोकतंत्र में उनका अगाध वि वाश झलकता था। उनके संबोधनों में भारत को एक मजबूत राष्ट्र बनाने की दृष्टि भी नजर आती थी, संसद में मई 1996 में अपनें सम्बोधन में उन्होंने कहा था कि –

सत्ता का खेल चलेगा,
सरकारे आयेंगी–जायेंगी, पार्टिया बनेंगी बिगडेंगी।
मगर ये देश रहना चाहिए, इस देश का लोकतंत्र अमर रहना चाहिए।[17]

संसद में दिया गया अटल बिहारी वाजपेयी का यह आदर्श कथन इस सिद्धान्त को स्पष्ट करता है कि वह उस राजनीति के वाहक थे, जिसके कुछ मूल्य व मर्यादाएं थी। राजनीतिक कुरीतियों से लड़ने की जीवटता के कारण ही उन्होंने हार्स ट्रेडिंग को न ही बढ़ावा दिया वरन इसके रोक थम के लिए दल बदल कानून में संशोधन कर दल बदल करने वाले सांसदों विधायकों के साथ कम से कम दो तिहाई सदस्यों का होना अनिवार्य किया, साथ ही साथ लोक सभा एवं विधानसभा के कुल सदस्यों की संख्या का पन्द्रह प्रतिशत मंत्रीमंडल विस्तार की सीमा सीमित रखी।[18] अटल बिहारी वाजपेयी ने ''अमर है गणतंत्र ''शीर्षक कविता 26 जनवरी 1975 को उन क्षणों मे रची थी जब वे नजरबंद थे। यह कविता इस प्रकार से है –

रक्त के आँसू बहाने को विवश गणतंत्र,
राजमद ने रौदं डाले मुक्ति के शुभ मंत्र।
क्या इसी दिन के लिए पूर्वज हुए बलिदान?
पीढ़िया जूझीं,सदियों चला अग्निस्नान?
स्वतंत्रता के दुसरे संघर्ष का घननाद,
होलिका आपात की फिर माँगती प्रहलाद।
अमर है गणतन्त्र कारा के खुलेंगे द्वार,
पुत्र अमृत के न विष से मान सकते हार।[19]

अटल बिहारी वाजपेयी राष्ट्र के लिए बलिदान होने वाले सपूतों का स्मरण जिस श्रद्धाभाव से करते है वह सभी देशवासियों के लिए अनुकरणीय है, 'उनकी याद करें' गीत के ये स्वर इसी संदर्भ में है –

जो वर्षो तक लड़े जेल में, उनकी याद करें,
जो फाँसी पर चढ़े खेल में, उनकी याद करे याद करें।
याद करें काला पानी को
अंग्रेजों की मनमानी को
कोल्हू में जुट तेल पेरते
सावरकार के बलिदानी को[20]

अटल बिहारी वाजपेयी ने यह जानते हुए भी पोखरन में परमाणु परीक्षण का फैसला लिया कि अंतराष्ट्रीय समुदाय में इसकी प्रतिक्रिया होगी, किंतु भारत को ऊंचाईयों पर पहुँचाने के लिए मानों उनकी सोच, उन्हें अपने फैसले पर अटल रखे हुए थी कि –

बाधाएँ आती हैं आएँ
घिरें प्रलय की घोर घटाएँ
पावों के नीचे अंगारे
सिर पर बरसें यदि ज्वालाएँ
निज हाथों में हसते हसते
आग लगा कर जलना होगा,
कदम मिला कर चलना होगा।[21]

उन्होंने राष्ट्र की सेवा करना हमेशा जारी रखा और सभी परिस्थितियों में एकता और सहमति बना कर चले।

व्यक्ति की गरिमा जो भारत में बंधुता की भावना का आधार है, न कि धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग उद्भव जन्मस्थान निवास या सामाजिक स्थिति। अटल बिहारी वाजपेयी ने कभी भी मानव–मानव में भेद नहीं किया। ये पंक्तियाँ इसी संदर्भ में उल्लेखित है।

मैंने छाती का लहू पिला, पाले विदेश के क्षुधित लाल।
मुझ को मानव में भेद नहीं, मेरा अन्तस्थल वर विशाल।
जगा के ठुकराए लोगों को, लो मेरे घर का खुला द्वार।
अपना सब कुछ लुटा चुका, फिर भी अक्षय है
धनागार।।[22]

इसी संदर्भ में अटल बिहारी वाजपेयी की ''पहचान'' शीर्षक की एक कविता इस प्रकार से है–

छोटे मन से कोई बड़ा नहीं होता,
टूटे मन से कोई खड़ा नहीं होता।[23]
मन हार कर, मैदान नहीं जीते जाते,
न मैदान जीतने से मन ही जीते जाते हैं।।[24]

इकहत्तर पंक्तियों की यह लम्बी कविता जीवन के अनुभूत तथ्यों का एक दस्तावेज है। इसी कविता में ये पंक्तियों भी पढ़ने को मिलती है।–

आदमी न ऊँचा होता है, न नीचा होता है,
न बड़ा होता है,न छोटा होता है।
आदमी सिर्फ आदमी होता है।।[25]

एक सार्वजनिक सम्बोधन में उन्होनें 'आजादी' पर अपने विचार कविता के माध्यम से इस तरह दी है–

इसे मिटाने की साजिस करने वालों से कह दो
कि चिंगारी का खेल बुरा होता है
औरों के घर आग लगाने का जो सपना
वो अपने ही घरों में सदा खड़ा होता है।[26]

अटल बिहारी वाजपेयी की यह कविता व्यक्ति की गरिमा के साथ समानता के मूल्यों को भी प्रदर्शित करती है तथा समरस्ता पूर्ण न्याय की तरफ भी इशारा करती है। सहयोग सामान्यतः आपसी सामंजस्य के साथ समूह में की जाने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इस संदर्भ में अटल बिहारी वाजपेयी कभी नहीं चाहते थे कि दो पड़ोसी भारत और पाकिस्तान आपस में लड़े। वर्तमान पीढ़ी पर जो गुजरी सो गुजरी, किन्तु भावी पीढ़ी के साथ वैसा कुछ नहीं होना चाहिए। इसी संदर्भ में इनकी यह कविता है।

हमें चाहिए शान्ति, जिन्दगी हमको प्यारी,
हमें चाहिए शान्ति,सृजन की है तैयारी,
हमनें छेड़ी जंग भूख से, बीमारी से,
आगे आकर हाथ बटाए दुनिया सारी।
हरी–भरी धरती को खूनी रंग न लेने देंगे।
जंग न होने देंगे।[27]

भारत पाकिस्तान पड़ोसी, साथ–साथ रहना है।
प्यार करें, या वार करें, दोनों को ही सहना है।
रूसी बम हो या अमेरिका, खून एक बहना है।
जो हम पर गुजरी बच्चों के संग न होने देंगे।
जंग न होने देंगे।[28]

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि आचार विहीन राजनीति में मूल्यों की गिरावट कोई नई बात नहीं हैं, किन्तु वर्तमान में जिस प्रकार राजनीति के नाम पर लोकतांत्रिक मूल्यों का तेजी से क्षरण हो रहा है, वह अवश्य चिन्तनीय है ऐसे में अटल बिहारी वाजपेयी की राजनीति को आदर्श के रूप में देखा जा सकते हैं उन्होने धर्म सम्प्रदाय जाति क्षेत्र तथा भाषा से हट कर राजनीति को मानव कल्याण आधारित बनाया, जिसमें जन विकास की भावना को बल मिला। सही मायने में लोकतांत्रिक व्यवस्था वही है, जिसमें सभी को समान अवसर एवं प्रतिनिधित्व मिले। अटल बिहारी वाजपेयी की राजनीति ने उपरोक्त के लिए अवसर प्रदान किया है। उन्होनें देश की अखण्डता और एकता को बनाए रखने के लिए व्यक्ति की गरिमा पर बल दिया। उन्होनें भारतीय राजनीति में विकसित लोकतांत्रिक मूल्यों को नया आधार दिया, जिसमें समता तथा बंधुत्व केन्द्र में रहा है।

वह भारत की राजनीति में एक ऐसे मार्गदर्शक के रूप में हैं, जिन्होनें दल आधारित विषमताओं से ऊपर उठ कर देश हित को सर्वोपरि रखा। समग्र रूप में अटल बिहारी वाजपेयी को एक सांसद, कैबिनेट मंत्री, और प्रधानमंत्री के तौर पर देखा जाए तो उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व में किये गये प्रत्येक कार्यों में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति उनकी गहरी प्रतिबध्दता परिलक्षित होती है।

lanHkZ %&

1. डिवी, जॉन, शिक्षा और लोकतन्त्र, अनु. लाडली मोहन माथुर, ग्रन्थ शिल्पी (इंडिया) प्रा. लि., नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 83.
2. चार्ल्स, किरूबा एवं वी. अरूल सेल्वी, पीस एण्ड वैल्यू एजूकेशन, नीलकमल पब्लिकेशन प्रा. लि., हैदराबाद, 2012, पृ. सं. 256.
3. शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद, कवि राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी, किताबघर, नई दिल्ली, 1997, पृ. सं. 53.
4. वाजपेयी, अटल बिहारी, मेरी इक्यावन कविताएँ, सम्पादकीय–डॉ. चन्द्रिका प्रसाद शर्मा, किताबघर, नई दिल्ली, 2018, पृ. सं. 112.
5. बी. बी. सी. हिन्दी, अटल बिहारी वाजपेयी का निधन : युग का अन्त, https://www.bbc.com/hindi/india-45204576 देखा गया–02/02/2019.

6. वही.
7. वाजपेयी, अटल बिहारी, मेरी इक्यावन कविताएँ, पूर्वोक्त, पृ. सं. 141.
8. वही, पृ. सं. 161.
9. वही, पृ. सं. 26.
10. पंजाब केसरी 'जानिए कैसा रहा पूर्व पी. एम. अटल बिहारी वाजपेयी का राजनैतिक सफर' https://www.punjabkesari.in/national/news/know-the-vajpayee-political-journey-856884 देखा गया–02 / 02 / 2019.
11. पंजाब केसरी 'हिन्दी भाषा में अहम योगदान' https://www.punjabkesari.in/national/news/know-the-vajpayee-political-journey-856884 देखा गया–04 / 02 / 2019.
12. वेब दुनिया 'अटल बिहारी वाजपेयी : राजनैतिक सफर http://hindi.webdunia.com/atal-bihari-vajpayee/atal-bihari-vajpayee-bjp-former-prime-minister-118081600068_1.html देखा गया–02 / 02 / 2019.
13. वाजपेयी, अटल बिहारी, मेरी इक्यावन कविताएँ, पूर्वोक्त, पृ. सं. 23.
14. डिवी, जॉन, शिक्षा और लोकतन्त्र, पूर्वोक्त, पृ. सं. 230.
15. शर्मा, चन्द्रिका प्रसाद, कवि राजनेता अटल बिहारी वाजपेयी, पूर्वोक्त, पृ. सं. 53.
16. खन्ना, बी. एन. एवं लिपाक्षी अरोड़ा, भारत की विदेश नीति, विकास पब्लिकेशन हाउस, नई दिल्ली, 2016, पृ. सं. 53.
17. द वायर 'हार नहीं मानूँगा रार नई ठानूँगा' http://thewirehindi.com/54416/remembering-poet-and-former-prime-minister-atal-bihari-vajpayee/ देखा गया–04 / 02 / 2019.
18. वही.
19. वाजपेयी, अटल बिहारी, मेरी इक्यावन कविताएँ, पूर्वोक्त, पृ. सं. 72.
20. वही, पृ. सं. 131.
21. वही, पृ. सं. 85.
22. वही, पृ. सं. 127.
23. वही, पृ. सं. 19.
24. वही.
25. वही, पृ. सं. 18.
26. द वायर 'हार नहीं मानूँगा रार नई ठानूँगा' http://thewirehindi.com/54416/remembering-poet-and-former-prime-minister-atal-bihari-vajpayee/ देखा गया–04 / 02 / 2019.
27. वाजपेयी, अटल बिहारी, मेरी इक्यावन कविताएँ, पूर्वोक्त, पृ. सं. 101.
28. वही, पृ. सं. 102.